हिंदी साहित्य चैनल

RPSC प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी (First व Second Grade) हिंदी • निर्धारित पाठ

बालकांड
के नोट्स
(रामचरितमानस)

कथा-क्रम • प्रसंग-तालिकाएँ • पात्र-पहचान • अलंकार • जल्दी दोहराव • 26 अभ्यास-प्रश्न उत्तर सहित

केवल कृष्ण घोड़ेला

हिंदी साहित्य चैनल | श्रीगंगानगर, राजस्थान

store.hindisahity.com

लेखक परिचय



केवल कृष्ण घोड़ेला

एम.ए., बी.एड. (नेट हिंदी), सहायक आचार्य, श्रीगंगानगर (राजस्थान)। संचालक, हिंदी साहित्य चैनल।

हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों के लिए सरल भाषा में परीक्षा-उपयोगी नोट्स, इकाई-वार MCQ और वीडियो बनाते हैं। इन नोट्स का उद्देश्य है कि पाठ्यक्रम के निर्धारित पाठ का पूरा तथ्य-क्रम एक जगह, सीधी और याद रखने योग्य भाषा में मिल सके।

वेबसाइट : hindisahity.com
स्टोर और पाठशाला : store.hindisahity.com
YouTube : Hindi Sahitya Channel
Telegram : t.me/hindisahitychannel
WhatsApp : +91 96802 60474

नोट : तथ्यों को परीक्षा से पहले अपनी पाठ्य-पुस्तक से मिला लें। जहाँ मतभेद की संभावना है, वहाँ लाल बॉक्स में संकेत दिया गया है।

तालिका

किसी भी शीर्षक पर क्लिक करके सीधे वहाँ पहुँचें।

तुलसीदास : संक्षिप्त परिचय
रामचरितमानस : संक्षिप्त परिचय
1. बालकांड : एक नज़र
सात कांडों का क्रम
2. कथा सुनाने की परंपरा : वक्ता और श्रोता
3. मंगलाचरण और वंदना-खंड
4. नाम-वंदना : राम-नाम की महिमा
5. मानस-रूपक : मानसरोवर और उसके घाट
6. शिव, सती और पार्वती की कथा
7. राम-अवतार के कारण
8. राम-जन्म और बाल-लीला
9. विश्वामित्र के साथ : ताड़का से जनकपुर तक
10. पुष्प-वाटिका
11. धनुष-यज्ञ और धनुष-भंग
12. परशुराम-लक्ष्मण संवाद
13. विवाह और अयोध्या वापसी
14. पात्र-पहचान
15. परीक्षा की दृष्टि से अलंकार और भाव
16. जल्दी दोहराव
17. अभ्यास-प्रश्न : बालकांड

रामचरितमानस का बालकांड पहला और सबसे बड़ा कांड है। इसमें मंगलाचरण, राम-कथा की परंपरा, शिव-पार्वती की कथा, राम-अवतार के कारण, राम-जन्म, विश्वामित्र के साथ यात्रा, पुष्प-वाटिका, धनुष-भंग, परशुराम-संवाद और चारों भाइयों के विवाह तक की कथा है। नीचे परीक्षा में पूछे जाने वाले मुख्य तथ्य क्रम से दिए हैं।

तुलसीदास : संक्षिप्त परिचय

बिंदु	विवरण
जन्म (सर्वमान्य मत)	संवत 1589 (सन 1532)
जन्म-स्थान (सर्वमान्य मत)	राजापुर, जिला बाँदा, उत्तर प्रदेश
निधन	संवत 1680 (सन 1623), अस्सी घाट, काशी
पिता और माता	आत्माराम दुबे और हुलसी
पत्नी	रत्नावली
गुरु	दीक्षा-गुरु नरहरिदास; शिक्षा-गुरु शेष सनातन (काशी)
भक्ति का भाव	दास्य भाव की भक्ति; राम के उपासक
अन्य प्रमुख रचनाएँ	विनय पत्रिका, कवितावली, गीतावली, कृष्ण गीतावली, दोहावली, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, बरवै रामायण, रामलला नहछू, रामाज्ञा प्रश्न

याद रखें

तुलसी के जन्म और स्थान पर मतभेद हैं। प्रश्न में "सर्वमान्य" या किसी विद्वान का नाम लिखा हो तो उसी के अनुसार उत्तर चुनें। विनय पत्रिका, कवितावली, गीतावली, कृष्ण गीतावली और दोहावली की भाषा ब्रज है; मानस, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, बरवै रामायण और रामाज्ञा प्रश्न की भाषा अवधी है। जन्म-संवत और माता के नाम अपनी पाठ्य-पुस्तक से मिला लें।

रामचरितमानस : संक्षिप्त परिचय

रामचरितमानस तुलसीदास का प्रबंध-काव्य है। इसमें मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जीवन सात कांडों में कहा गया है: बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुंदरकांड, लंकाकांड और उत्तरकांड। यह अवधी भाषा में दोहा-चौपाई शैली में लिखा गया है। इसका प्रधान रस शांत है, पर प्रसंग के अनुसार शृंगार, रौद्र और भयानक रस भी मिलते हैं। राम का रूप लोकमंगल के आदर्श का है। आचार्य शुक्ल ने इसे "लोकमंगल की साधनावस्था" का काव्य कहा है।

एक नज़र में

कुल कड़वक 1074 • बालकांड पहला और सबसे बड़ा कांड • अयोध्याकांड को हृदय-स्थल कहा जाता है • रचना का आरंभ संवत 1631, चैत्र शुक्ल नवमी, अयोध्या

1. बालकांड : एक नज़र

बिंदु	तथ्य
कांड-क्रम	पहला कांड; मानस के सात कांडों में सबसे बड़ा
कड़वक	बालकांड में 361; पूरे मानस में 1074
भाषा	अवधी (साहित्यिक शब्दों वाली अवधी)
मुख्य छंद	दोहा, चौपाई, सोरठा, हरिगीतिका
रचना का आरंभ	संवत 1631 (सन 1574), चैत्र शुक्ल नवमी, मंगलवार, अयोध्या में। उसी दिन राम-जन्म की तिथि है
रचना में समय	2 वर्ष 7 माह 26 दिन (परंपरा के अनुसार)
कांड का आरंभ	संस्कृत के 7 श्लोक, फिर अवधी में विस्तृत मंगलाचरण
कथा का अंत	राम-सीता और तीनों भाइयों के विवाह के बाद अयोध्या वापसी

कड़वक क्या है

चार, पाँच, छह या सात चौपाइयों के समूह के बाद एक दोहा (कभी-कभी सोरठा) आता है। चौपाइयों और दोहे का यह पूरा समूह एक **कड़वक** कहलाता है।

उसी दिन रचना क्यों शुरू की

तुलसीदास के अनुसार उस दिन वही ग्रह और योग थे जो राम के जन्म के समय थे। इसलिए चैत्र शुक्ल नवमी को उन्होंने रचना आरंभ की। आरंभ की तिथि तुलसी ने स्वयं बालकांड में लिखी है। मानस का अधिकांश भाग अयोध्या में, और कुछ भाग काशी में रचा गया।

सात कांडों का क्रम

1. बाल जन्म, विवाह; सबसे बड़ा	**2. अयोध्या** वनवास; हृदय-स्थल	**3. अरण्य** सीता-हरण; दंडकवन	**4. किष्किंधा** सुग्रीव-मित्रता; हनुमान से भेंट
5. सुंदर लंका-यात्रा; हनुमान	**6. लंका** युद्ध; रावण-वध	**7. उत्तर** राज्याभिषेक; रामराज्य	

2. कथा सुनाने की परंपरा : वक्ता और श्रोता

बालकांड में राम-कथा कई वक्ता-श्रोता जोड़ियों के माध्यम से आती है। तुलसी कहते हैं कि यह कथा सबसे पहले शिव ने रची और पार्वती को सुनाई।

संवाद	विवरण
शिव और पार्वती	राम-कथा का मूल स्रोत माना गया। शिव ने कथा अपने मन में रची और उचित समय पर पार्वती को सुनाई
याज्ञवल्क्य और भरद्वाज	प्रयाग में माघ-स्नान के बाद भरद्वाज के आग्रह पर याज्ञवल्क्य कथा सुनाते हैं। बालकांड की पूरी कथा इसी संवाद के भीतर है

संवाद	विवरण
काकभुशुंडि और गरुड़	यह संवाद उत्तरकांड में विस्तार से आता है। बालकांड में केवल संकेत है
तुलसी और गुरु	तुलसी कहते हैं कि कथा उन्होंने बचपन में अपने गुरु से सूकर-क्षेत्र में सुनी थी। उन्हें उस समय वह पूरी समझ नहीं आई थी

ध्यान दें

परीक्षा में "किसने किसे सुनाई" वाले प्रश्न आते हैं। याद रखें: शिव → पार्वती; याज्ञवल्क्य → भरद्वाज; काकभुशुंडि → गरुड़। सूकर-क्षेत्र का स्थान और गुरु का नाम अपनी पाठ्य-पुस्तक से मिला लें।

3. मंगलाचरण और वंदना-खंड

दो मंगलाचरण

बालकांड का आरंभ **संस्कृत के 7 श्लोकों** से होता है। उसके बाद **अवधी में दूसरा मंगलाचरण** आता है, जो बहुत विस्तृत है। परंपरा है कि संस्कृत में श्लोक लिखते समय शिव प्रेरणा देकर लोकभाषा में लिखवाना चाहते थे, इसलिए तुलसी ने अवधी में फिर से मंगलाचरण किया।

संस्कृत श्लोक	वंदना किसकी
पहला	वाणी (सरस्वती) और विनायक (गणेश)
दूसरा	पार्वती और शिव (भवानी-शंकर)
तीसरा	शिव, गुरु रूप में
चौथा	वाल्मीकि और हनुमान (कवीश्वर-कपीश्वर)
पाँचवाँ	सीता
छठा	राम
सातवाँ	वंदना नहीं; रचना का उद्देश्य (स्वांतःसुखाय)

क्रम पर नज़र

छह श्लोकों में वंदना है, सातवें में नहीं। पहला श्लोक वाणी और विनायक का है, इसलिए "सर्वप्रथम वंदना" के प्रश्न में सरस्वती और गणेश दोनों ही सही माने जाते हैं। श्लोक-क्रम पाठ्य-पुस्तक से एक बार मिला लें।

अवधी मंगलाचरण में वंदना का क्रम इस प्रकार है: गणेश, नारायण, शिव, गुरु, ब्राह्मण, संत और अंत में खल (दुष्ट)। इसके बाद तुलसी समस्त जगत को राममय मानकर देवता, मनुष्य, पशु-पक्षी सबकी बिना भेदभाव के वंदना करते हैं, ताकि काव्य बिना बाधा पूरा हो। फिर वे अपनी दीनता और अल्पज्ञता कहते हैं: राम का चरित अथाह सागर है और वे साधारण, काव्य-कला से अनजान व्यक्ति हैं।

प्रसंग	मुख्य बात
गणेश-वंदना	गणेश के स्मरण से सब सिद्धियाँ मिलती हैं
शिव (मयन-मर्दन)	कामदेव का नाश करने वाले; "मदनमयन" का अर्थ कामदेव का नाश

प्रसंग	मुख्य बात
गुरु-वंदना	गुरु के चरण कमल-परागवत हैं; उनके नख की ज्योति हृदय में दिव्य दृष्टि जगाती है; गुरु-वचन संजीवनी जड़ी का सुंदर चूर्ण है, जो मोह-रोग का नाश करता है
ब्राह्मण-वंदना	ब्राह्मण को "महिसुर" (पृथ्वी के देवता) कहा गया है; वे मोहजन्य संशय हरते हैं
संत-वंदना	संतों का चरित कपास के समान शुभ और गुणमय; संत-समाज चलता-फिरता तीर्थराज प्रयाग है; संत सबके प्रति समान भाव रखते हैं, उनका न कोई शत्रु, न मित्र
सत्संग	सत्संग आनंद की जड़ है; उसके बिना विवेक नहीं होता; वह राम की कृपा से मिलता है
खल-वंदना	तुलसी खलों की भी वंदना करते हैं; खल दूसरों की हानि में अपना लाभ मानते हैं; दूसरों के उत्थान पर वे कुंभकर्ण की तरह सोएँ, यही अच्छा

उपमा-उदाहरण जो प्रश्न बनते हैं

संतों की समानता के लिए उपमा है: जैसे अंजलि में रखे फूल दोनों हाथों को समान सुगंध देते हैं, वैसे ही संत सबके प्रति समान हैं। अंजलि में रखे फूल की यह उपमा **उपमा अलंकार** का उदाहरण है। वह पंक्ति दोहे में है, चौपाई में नहीं।

संत और असंत का भेद

संत बिछड़ने पर प्राण हर लेते हैं, यानी उनका बिछोह कष्ट देता है। असंत मिलने पर दारुण दुख देते हैं। दोनों एक साथ जगत में उत्पन्न होते हैं, पर गुण अलग हैं, जैसे कमल और जोंक जल में साथ जन्मकर भी भिन्न गुण वाले होते हैं।

छंद-मात्रा याद रखें

चौपाई के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ। दोहे में 13 और 11 मात्राएँ (पहले चरण में 13, दूसरे में 11)। सोरठा दोहे का उलटा रूप है।

4. नाम-वंदना : राम-नाम की महिमा

वंदना-खंड के बाद तुलसी राम-नाम की वंदना करते हैं। यह भाग परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

विषय	मुख्य बात
नाम और रूप	तुलसी के अनुसार नाम और रूप दोनों ईश्वर की उपाधियाँ हैं। दोनों का स्वरूप समझना कठिन है। नाम को रूप से बड़ा बताया गया है, क्योंकि नाम के बिना रूप की पहचान नहीं होती
नाम-जप	नाम का जप सभी युगों में सिद्धि देता है, पर कलियुग में केवल नाम ही सहारा है
नाम-मणिदीप	तुलसी कहते हैं कि जीभ को देहली और राम-नाम को मणि-दीपक मान लो, तो भीतर और बाहर दोनों ओर उजाला होगा। यह प्रसिद्ध दोहा है
निर्गुण और सगुण	नाम निर्गुण और सगुण दोनों रूपों से बड़ा बताया गया है

मिलान कर लें

नाम-वंदना की चौपाई-दोहा संख्या के लिए अपनी पाठ्य-पुस्तक देखें। तथ्य ऊपर के अनुसार याद रखें।

5. मानस-रूपक : मानसरोवर और उसके घाट

मानस का नाम कैसे पड़ा

तुलसी के अनुसार इस राम-चरित को सबसे पहले शिव ने रचा और अपने मन (मानस) में रखा। अनुकूल समय आने पर उन्होंने पार्वती को सुनाया। मन में रखने के कारण शिव ने इसका नाम "रामचरितमानस" रखा।

तुलसी ने मानस की तुलना मानसरोवर से की है। इसके सात कांड सरोवर की सात सीढ़ियाँ हैं और चार संवाद चार घाट हैं।

घाट	किसके लिए	संवाद
ज्ञान-घाट (राजघाट)	विशिष्ट ज्ञानी	शिव-पार्वती संवाद
उपासना-घाट (पनघट)	सती स्त्रियाँ और उपासक	काकभुशुंडि-गरुड़ संवाद
कर्म-घाट (पंचायती घाट)	सामान्य जन	याज्ञवल्क्य-भरद्वाज संवाद
प्रपत्ति-घाट (गऊघाट)	दीन और आर्त जन	दीनों की अनन्य भक्ति, शरणागति

घाटों में सावधानी

चारों घाट और संवादों की जोड़ी याद रखें। दूसरे नाम (राजघाट, पनघट आदि) पाठ्य-पुस्तक में कुछ अलग हो सकते हैं। कथा का आरंभ याज्ञवल्क्य-भरद्वाज संवाद से होता है और उसके भीतर शिव-पार्वती संवाद आता है।

6. शिव, सती और पार्वती की कथा

प्रसंग	मुख्य बिंदु
शिव और सती	शिव सती के साथ अगस्त्य ऋषि के आश्रम से राम-कथा सुनकर लौटते हैं। दंडक वन में सीता-वियोग में भटकते राम को देखकर शिव "सच्चिदानंद परमधाम" कहकर प्रणाम करते हैं। सती को संदेह होता है
सती की परीक्षा	सती सीता का रूप धरकर राम की परीक्षा लेती हैं। राम उन्हें पहचानकर प्रणाम करते हैं और पूछते हैं कि शिव कहाँ हैं। सती लज्जित होकर लौटती हैं। शिव मन में निश्चय करते हैं कि अब सती को पत्नी रूप में नहीं रखेंगे और समाधि में लीन हो जाते हैं
दक्ष-यज्ञ	दक्ष प्रजापति बनकर अहंकारी हो जाता है और शिव को यज्ञ में नहीं बुलाता। सती पिता के घर जाती हैं, शिव का अपमान देखती हैं और योगाग्नि में देह त्याग देती हैं
पार्वती का जन्म	सती अगले जन्म में हिमालय और मैना की पुत्री पार्वती बनती हैं। नारद के कहने पर वे शिव को पति रूप में पाने के लिए कठोर तप करती हैं। पत्ते खाना भी छोड़ देने पर उनका नाम अपर्णा पड़ा
कामदेव-दहन	तारकासुर से पीड़ित देवता जानते हैं कि केवल शिव का पुत्र उसे मार सकता है। वे समाधि तोड़ने कामदेव को भेजते हैं। शिव का तीसरा नेत्र खुलता है और कामदेव भस्म हो जाता है। रति के विलाप पर शिव कहते हैं कि कामदेव कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न के रूप में जन्म लेगा। शरीर-रहित होने से उसका नाम अनंग पड़ा
शिव-पार्वती विवाह	शिव पार्वती की परीक्षा के लिए सप्तर्षियों को भेजते हैं। विचित्र वेश में आए शिव को देख हिमालय और मैना विचलित होते हैं, फिर संतुष्ट होकर विवाह कर देते हैं। आगे चलकर पुत्र कार्तिकेय का जन्म होता है, जो तारकासुर का वध करते हैं

🔥 हिंदी साहित्य पाठशाला के सभी कोर्स एक ही फीस में 🔥
👉 देखने के लिए विज़िट करें : store.hindisahity.com/pathshala 🎁

7. राम-अवतार के कारण

बालकांड में राम के अवतार के अनेक कारण बताए गए हैं। इनमें से चार प्रसंग विस्तार से हैं।

कारण	कथा
नारद का शाप	समाधि में कामदेव के बाण निष्फल रहने से नारद को अहंकार हो जाता है। वे शिव को बताते हैं। शिव मना करते हैं कि विष्णु को न बताना, पर नारद विष्णु को भी बता देते हैं। विष्णु माया से एक नगर रचते हैं। राजा शीलनिधि की पुत्री विश्वमोहिनी पर नारद आसक्त हो जाते हैं। वे विष्णु से "हरि का रूप" माँगते हैं। विष्णु "हरि" (वानर) का रूप देते हैं। स्वयंवर में शिव के दो गण नारद को चेताते हैं कि अपना मुँह देखो। नारद जल में मुँह देखकर क्रोध में दोनों गणों को राक्षस होने का शाप देते हैं। विष्णु को भी शाप देते हैं कि तुम स्त्री-वियोग में तड़पोगे और वानर ही तुम्हारी सहायता करेंगे
मनु और शतरूपा	वे राम को पुत्र रूप में पाने के लिए कठोर तप करते हैं। वरदान से अगले जन्म में दशरथ और कौशल्या बनते हैं
प्रतापभानु	कैकय देश का राजा प्रतापभानु कपटी मुनि के छल में फँसता है। ब्राह्मणों के शाप से वह अगले जन्म में रावण बनता है
रावण का आतंक	रावण बलशाली होकर अत्याचार करता है। पृथ्वी गौ का रूप धरकर देवताओं और मुनियों के साथ पुकार लगाती है। आकाशवाणी होती है कि प्रभु मनुष्य रूप में अवतार लेंगे

> **नाम और कारण-गिनती**
> प्रतापभानु के भाई और मंत्री के नाम, तथा "अवतार के कारण" की गिनती अलग-अलग ग्रंथों में अलग मिलती है। गिनती पूछे जाने पर अपनी पाठ्य-पुस्तक देखें।

8. राम-जन्म और बाल-लीला

प्रसंग	मुख्य बिंदु
पुत्रेष्टि यज्ञ	दशरथ पुत्र के लिए यज्ञ करते हैं। वसिष्ठ के कहने पर शृंगी ऋषि यज्ञ कराते हैं। अग्नि से मिले चरु (खीर) को रानियों में बाँटा जाता है
जन्म	चैत्र शुक्ल नवमी को मध्याह्न में राम का जन्म। राम कौशल्या से, भरत कैकेयी से, लक्ष्मण और शत्रुघ्न सुमित्रा से जन्म लेते हैं
नामकरण	वसिष्ठ चारों बालकों का नामकरण करते हैं। राम का नाम आनंद देने वाला बताया गया। भरत का नाम संसार का भरण-पोषण करने वाले के अर्थ में, शत्रुघ्न का नाम शत्रु का नाश करने वाले के अर्थ में, और लक्ष्मण का नाम शुभ लक्षणों के धाम के अर्थ में
बाल-लीला	राम के बाल-रूप और क्रीड़ाओं का मनोहर वर्णन है। आगे चलकर चारों भाई गुरु वसिष्ठ के पास विद्या पाते हैं

9. विश्वामित्र के साथ : ताड़का से जनकपुर तक

प्रसंग	मुख्य बिंदु
विश्वामित्र का आगमन	विश्वामित्र अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राम-लक्ष्मण को माँगने दशरथ के पास आते हैं। दशरथ पुत्र-मोह में हिचकते हैं। वसिष्ठ के समझाने पर दोनों कुमार मुनि के साथ जाते हैं
ताड़का-वध	मार्ग में राम ताड़का का वध करते हैं
यज्ञ-रक्षा	राम एक बाण से मारीच को बहुत दूर समुद्र के पार फेंक देते हैं और सुबाहु को मारते हैं। विश्वामित्र का यज्ञ निर्विघ्न पूरा होता है
अहल्या-उद्धार	मार्ग में सुनसान आश्रम में शिला बनी अहल्या मिलती हैं। वे गौतम ऋषि की पत्नी थीं और शापवश शिला हो गई थीं। राम के चरण-स्पर्श से उनका उद्धार होता है। अहल्या राम की स्तुति करती हैं
जनकपुर की ओर	विश्वामित्र जनक के धनुष-यज्ञ की सूचना देते हैं और दोनों भाइयों को लेकर जनकपुर पहुँचते हैं। जनक उनका स्वागत करते हैं

10. पुष्प-वाटिका

प्रसंग	मुख्य बिंदु
पुष्प लेने जाना	गुरु की पूजा के लिए राम-लक्ष्मण जनक की वाटिका में फूल लेने जाते हैं
सीता का आना	सीता सखियों के साथ गौरी-पूजन के लिए उसी वाटिका में आती हैं
पहला दर्शन	सीता के कंगन, करधनी और नूपुर की ध्वनि सुनकर राम लक्ष्मण से कहते हैं कि मानो कामदेव ने डंका बजा दिया हो। राम की आँखें सीता के मुख पर चकोर की तरह टिक जाती हैं। मानो पलकों के निवासी निमि मर्यादा के कारण पलक छोड़कर चले गए
सखी की बात	एक सखी सीता को राम-लक्ष्मण दिखाती है। सौंदर्य देखकर कहती है कि वाणी के पास नेत्र नहीं और नेत्र के पास वाणी नहीं
गौरी-पूजन	सीता गौरी की स्तुति करती हैं। गौरी की मूर्ति से माला गिरती है और वाणी होती है कि तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। सीता और राम दोनों प्रसन्न होकर लौटते हैं

11. धनुष-यज्ञ और धनुष-भंग

प्रसंग	मुख्य बिंदु
स्वयंवर की शर्त	जनक का प्रण: जो शिव का धनुष तोड़ेगा, वही सीता से विवाह करेगा। देश-देश के राजा आते हैं
राजाओं की असफलता	कोई राजा धनुष उठा नहीं पाता। निराश जनक कह उठते हैं कि पृथ्वी वीरों से खाली हो गई। इससे लक्ष्मण क्रुद्ध होते हैं
राम का धनुष तोड़ना	विश्वामित्र की आज्ञा से राम धनुष उठाते हैं। धनुष बीच से टूट जाता है। भयंकर ध्वनि से लोक काँप उठते हैं
जयमाला	सीता राम के गले में जयमाला डालती हैं। जनक अयोध्या दूत भेजते हैं

12. परशुराम-लक्ष्मण संवाद

प्रसंग	मुख्य बिंदु
परशुराम का आगमन	धनुष टूटने की ध्वनि सुनकर परशुराम क्रोध में आते हैं। वे जनक से पूछते हैं कि धनुष किसने तोड़ा
लक्ष्मण का व्यंग्य	लक्ष्मण कहते हैं कि बचपन में हमने ऐसी कई धनुहियाँ तोड़ी थीं, तब आप कुछ नहीं बोले। वे कुठार दिखाने पर कहते हैं कि यहाँ कोई कुम्हड़े की बतिया नहीं, जो तर्जनी देखकर मर जाए
परशुराम का क्रोध	परशुराम अपने को बाल-ब्रह्मचारी और क्षत्रिय-कुल का शत्रु बताते हैं। वे अपने फरसे और सहस्त्रबाहु की भुजाएँ काटने की बात कहते हैं
राम का शांत करना	राम विनम्र वचन कहकर परशुराम को शांत करते हैं। परशुराम पहचान जाते हैं कि राम विष्णु के अवतार हैं और तपस्या के लिए चले जाते हैं

> **याद रखें**
> यह संवाद व्यंग्य और वक्रता के लिए प्रसिद्ध है। "लक्ष्मण = व्यंग्य, राम = विनय, परशुराम = क्रोध" इस त्रिकोण से प्रश्न पूछे जाते हैं।

13. विवाह और अयोध्या वापसी

प्रसंग	मुख्य बिंदु
बारात	दशरथ वसिष्ठ और बारातियों के साथ जनकपुर आते हैं। जनक स्वागत करते हैं
चार विवाह	राम का विवाह सीता से होता है। साथ ही लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न का भी विवाह जनक के परिवार की कन्याओं से होता है
विदाई और वापसी	दहेज और विदाई के बाद बारात अयोध्या लौटती है। नगर में उत्सव होता है
कांड का समापन	अंत में राम-चरित की महिमा और सुनने-गाने के फल का वर्णन है

> **नाम मिला लें**
> तीनों भाइयों की पत्नियों के नाम और जनक के भाई की पुत्रियाँ कौन थीं, यह अपनी पाठ्य-पुस्तक से मिला लें।

14. पात्र-पहचान

पात्र	पहचान
याज्ञवल्क्य, भरद्वाज	प्रयाग में कथा के वक्ता और श्रोता
सती, पार्वती	एक ही देवी के दो जन्म; सती शिव की पहली पत्नी
दक्ष	सती के पिता; यज्ञ में शिव को नहीं बुलाया
हिमालय, मैना	पार्वती के माता-पिता
कामदेव, रति	शिव की समाधि भंग करने वाला और उसकी पत्नी
नारद	माया में फँसने वाले और विष्णु को शाप देने वाले ऋषि

पात्र	पहचान
शीलनिधि, विश्वमोहिनी	माया-नगर के राजा और उनकी पुत्री
मनु, शतरूपा	अगले जन्म में दशरथ और कौशल्या
प्रतापभानु	कैकय का राजा; अगले जन्म में रावण
वसिष्ठ	दशरथ के कुलगुरु; चारों कुमारों का नामकरण
विश्वामित्र	यज्ञ-रक्षा के लिए राम-लक्ष्मण को ले जाने वाले मुनि
जनक	मिथिला के राजा; सीता के पिता; धनुष-यज्ञ के आयोजक
परशुराम	धनुष टूटने पर क्रोधित होकर आने वाले भृगुवंशी मुनि

15. परीक्षा की दृष्टि से अलंकार और भाव

पंक्ति या प्रसंग	अलंकार या बात
अंजलि में रखे सुगंधित फूल की तरह संत सबके प्रति समान	उपमा
“खल गण... दूसरों की हानि में हर्ष”	दुष्ट-स्वभाव का वर्णन; “उदय केतु सम” में उपमा, गुण और धन में अनुप्रास
“मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही”	उत्प्रेक्षा (वाचक शब्द “मानहुँ”); इससे राम के हृदय में सीता के प्रति प्रेम का उदय व्यंजित
निमि के पलक छोड़ जाने की कल्पना	उत्प्रेक्षा; राम का सीता-सौंदर्य पर मुग्ध होना
विश्वमोहिनी के दूसरे को वरने पर नारद का “गाँठ से मणि गिरना”	उत्प्रेक्षा (मानो)
“राम-लक्ष्मण का सीता और सखियों के सामने बादल हटाकर निकलते चंद्रमाओं जैसा रूप”	उपमा-उत्प्रेक्षा; “जुग बिधु” राम-लक्ष्मण के लिए, “जलद पटल” लता-कुंज के लिए
राम-लक्ष्मण का सौंदर्य देख सखी का कथन	वाणी के पास नेत्र नहीं, नेत्र के पास वाणी नहीं; सौंदर्य-वर्णन में असमर्थता

16. जल्दी दोहराव

प्रथम कांड बालकांड, सबसे बड़ा	**कड़वक** बालकांड 361, कुल 1074	**रचना-आरंभ** संवत 1631, चैत्र शुक्ल नवमी, मंगलवार, अयोध्या
समय 2 वर्ष 7 माह 26 दिन	**संस्कृत श्लोक** 7 (छह में वंदना)	**पहली वंदना** वाणी और विनायक

अवधी वंदना क्रम गणेश, नारायण, शिव, गुरु, ब्राह्मण, संत, खल	**कथा-परंपरा** शिव-पार्वती; याज्ञवल्क्य-भरद्वाज	**अनंग** शिव ने कामदेव को भस्म किया
अपर्णा पार्वती; पत्ते खाना भी छोड़ा	**नारद का शाप** वानर सहायक होंगे; विष्णु स्त्री-वियोग भोगेंगे	**राम-जन्म** चैत्र शुक्ल नवमी, मध्याह्न

17. अभ्यास-प्रश्न : बालकांड

1. रामचरितमानस के बालकांड में कितने कड़वक हैं?

(क) 62
(ख) 361
(ग) 1074
(घ) 100

उत्तर : (ख) 361 — पूरे मानस में 1074 कड़वक हैं।

2. मानस का सबसे बड़ा कांड कौन-सा है?

(क) अयोध्याकांड
(ख) बालकांड
(ग) उत्तरकांड
(घ) सुंदरकांड

उत्तर : (ख) बालकांड

3. बालकांड के आरंभ में संस्कृत के कितने श्लोक हैं?

(क) 5
(ख) 6
(ग) 7
(घ) 9

उत्तर : (ग) 7 — इनमें छह में वंदना है।

4. पहले संस्कृत श्लोक में किनकी वंदना है?

(क) वाणी और विनायक
(ख) शिव और पार्वती
(ग) सीता और राम
(घ) वाल्मीकि और हनुमान

उत्तर : (क) वाणी और विनायक

5. तुलसी ने मानस की रचना किस तिथि को आरंभ की?

(क) चैत्र शुक्ल नवमी
(ख) चैत्र कृष्ण नवमी
(ग) आश्विन शुक्ल दशमी
(घ) माघ शुक्ल पंचमी

उत्तर : (क) चैत्र शुक्ल नवमी — यह राम-जन्म की तिथि है।

6. अवधी मंगलाचरण में वंदना का सही क्रम कौन-सा है?

(क) गणेश, नारायण, शिव, गुरु, ब्राह्मण, संत, खल

(ख) गुरु, गणेश, शिव, संत, खल

(ग) शिव, गुरु, गणेश, संत

(घ) संत, खल, गणेश, गुरु

उत्तर : (क) गणेश, नारायण, शिव, गुरु, ब्राह्मण, संत, खल

7. मानस की कथा के आरंभ में प्रयाग में कौन-सा संवाद होता है?

(क) शिव-पार्वती

(ख) याज्ञवल्क्य-भरद्वाज

(ग) काकभुशुंडि-गरुड़

(घ) राम-लक्ष्मण

उत्तर : (ख) याज्ञवल्क्य-भरद्वाज

8. राम-कथा के मूल वक्ता कौन माने गए हैं जिन्होंने पार्वती को सुनाई?

(क) ब्रह्मा

(ख) शिव

(ग) विष्णु

(घ) नारद

उत्तर : (ख) शिव

9. सती ने राम की परीक्षा लेने के लिए किसका रूप धरा?

(क) लक्ष्मी

(ख) सीता

(ग) पार्वती

(घ) अहल्या

उत्तर : (ख) सीता

10. पार्वती का नाम “अपर्णा” क्यों पड़ा?

(क) उन्होंने पत्ते खाना भी छोड़ दिया

(ख) वे बहुत गोरी थीं

(ग) उन्होंने पर्णकुटी बनाई

(घ) वे हिमालय की पुत्री थीं

उत्तर : (क) उन्होंने पत्ते खाना भी छोड़ दिया

11. कामदेव का नाम “अनंग” कैसे पड़ा?

(क) शिव ने उसे भस्म कर शरीर-रहित कर दिया

(ख) वह बहुत सुंदर था

(ग) वह कभी दिखता नहीं था

(घ) उसने तप किया

उत्तर : (क) शिव ने उसे भस्म कर शरीर-रहित कर दिया

12. नारद ने विष्णु को क्या शाप दिया?

(क) वानर बनने का
(ख) स्त्री-वियोग में तड़पने का और वानरों की सहायता पाने का
(ग) पत्थर बनने का
(घ) राक्षस होने का

उत्तर : (ख) स्त्री-वियोग में तड़पने का और वानरों की सहायता पाने का

13. नारद ने शिव के दो गणों को क्या शाप दिया?

(क) वानर बनने का
(ख) राक्षस होने का
(ग) पत्थर होने का
(घ) मनुष्य होने का

उत्तर : (ख) राक्षस होने का

14. मनु और शतरूपा अगले जन्म में कौन बने?

(क) जनक और सुनयना
(ख) दशरथ और कौशल्या
(ग) हिमालय और मैना
(घ) वसिष्ठ और अरुंधती

उत्तर : (ख) दशरथ और कौशल्या

15. प्रतापभानु अगले जन्म में कौन बना?

(क) कुंभकर्ण
(ख) रावण
(ग) मारीच
(घ) सुबाहु

उत्तर : (ख) रावण

16. राम का नामकरण किसने किया?

(क) विश्वामित्र
(ख) वसिष्ठ
(ग) जनक
(घ) नारद

उत्तर : (ख) वसिष्ठ

17. मारीच को राम ने किस प्रकार दूर फेंका?

(क) बाण से समुद्र के पार
(ख) हाथ से उठाकर
(ग) शाप देकर
(घ) धनुष-दंड से

उत्तर : (क) बाण से समुद्र के पार

18. शिला बनी अहल्या का उद्धार किसके स्पर्श से हुआ?

(क) राम के चरण-स्पर्श से
(ख) लक्ष्मण के हाथ से
(ग) विश्वामित्र के मंत्र से
(घ) गौतम के आशीर्वाद से

उत्तर : (क) राम के चरण-स्पर्श से

19. "मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही" में कौन-सा अलंकार है?

(क) उपमा
(ख) उत्प्रेक्षा
(ग) रूपक
(घ) अनुप्रास

उत्तर : (ख) उत्प्रेक्षा — वाचक शब्द "मानहुँ" है।

20. पुष्प-वाटिका में सीता किसकी पूजा करने आई थीं?

(क) गौरी (पार्वती)
(ख) लक्ष्मी
(ग) सरस्वती
(घ) गंगा

उत्तर : (क) गौरी (पार्वती)

21. "बहु धनुही तोरी लरिकाईं" किसका कथन है?

(क) राम
(ख) लक्ष्मण
(ग) परशुराम
(घ) जनक

उत्तर : (ख) लक्ष्मण — यह परशुराम-लक्ष्मण संवाद का प्रसंग है।

22. परशुराम का क्रोध किसने शांत किया?

(क) राम ने
(ख) जनक ने
(ग) विश्वामित्र ने
(घ) वसिष्ठ ने

उत्तर : (क) राम ने — राम के विनम्र वचनों से।

23. सूची-I (पात्र) और सूची-II (पहचान) का मिलान कीजिए।

सूची-I	सूची-II
A. शीलनिधि	1. यज्ञ-रक्षा के लिए राम को ले जाने वाले
B. प्रतापभानु	2. कैकय का राजा
C. वसिष्ठ	3. विश्वमोहिनी के पिता
D. विश्वामित्र	4. नामकरण करने वाले गुरु

कूट :

(क) A-3, B-2, C-4, D-1

(ख) A-2, B-3, C-1, D-4

(ग) A-3, B-2, C-1, D-4

(घ) A-1, B-2, C-3, D-4

उत्तर : (क) A-3, B-2, C-4, D-1

24. अभिकथन (A) : बालकांड में दो मंगलाचरण हैं।

कारण (R) : संस्कृत श्लोकों के बाद तुलसी ने लोकभाषा अवधी में फिर वंदना की।

(क) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, पर R, A की सही व्याख्या नहीं है

(ग) A सत्य है, R असत्य है

(घ) A असत्य है, R सत्य है

उत्तर : (क) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है

25. राम और सीता का विवाह किस कांड की समाप्ति पर होता है?

(क) बालकांड

(ख) अयोध्याकांड

(ग) अरण्यकांड

(घ) किष्किंधाकांड

उत्तर : (क) बालकांड

26. तुलसी के अनुसार कलियुग में किसका आधार है?

(क) राम-नाम

(ख) यज्ञ

(ग) तप

(घ) दान

उत्तर : (क) राम-नाम

RPSC प्रथम श्रेणी या द्वितीय श्रेणी की तैयारी?

एक फीस में ढेर सारे कोर्स

हिंदी साहित्य पाठशाला

सिर्फ़ हिंदी साहित्य के लिए सालाना ऑनलाइन पढ़ाई

अलग-अलग कोर्स के लिए अलग-अलग पैसे देने की ज़रूरत नहीं। पाठशाला की सदस्यता में सूचीबद्ध सभी परीक्षाओं के कोर्स एक ही फीस में खुलते हैं: RPSC, UGC NET / JRF, SET, UP TGT-PGT, BPSC TGT-PGT और पंजाब-हरियाणा की हिंदी भर्तियाँ।

पाठशाला की ख़ास बातें

- ✔ **इकाई-वार विस्तृत पाठ,** 500+ पाठ और अध्याय, जैसे यह बालकांड का पाठ।
- ✔ **10,000+ MCQ,** हर प्रश्न का उत्तर समझाया हुआ।
- ✔ **मोबाइल और कंप्यूटर,** दोनों पर आराम से पढ़ें; अक्षर छोटा-बड़ा कर सकते हैं।
- ✔ **पूरे 365 दिन की सदस्यता,** सीधी कीमत ₹299 से, यानी रोज़ ₹1 से भी कम।
- ✔ **एक ही फीस,** सभी सूचीबद्ध कोर्स; नए पाठ और MCQ लगातार जुड़ते हैं।
- ✔ **सरल हिंदी,** परीक्षा के तथ्य क्रम से, याद रखने लायक रूप में।

अभी पाठशाला का कोर्स देखें

👉 store.hindisahity.com/pathshala

डेमो पाठ मुफ़्त पढ़ सकते हैं। कीमत और ऑफ़र वेबसाइट पर देखें।

जुड़े रहें : YouTube | Telegram | WhatsApp +91 96802 60474

केवल कृष्ण घोड़ेला • हिंदी साहित्य चैनल, श्रीगंगानगर